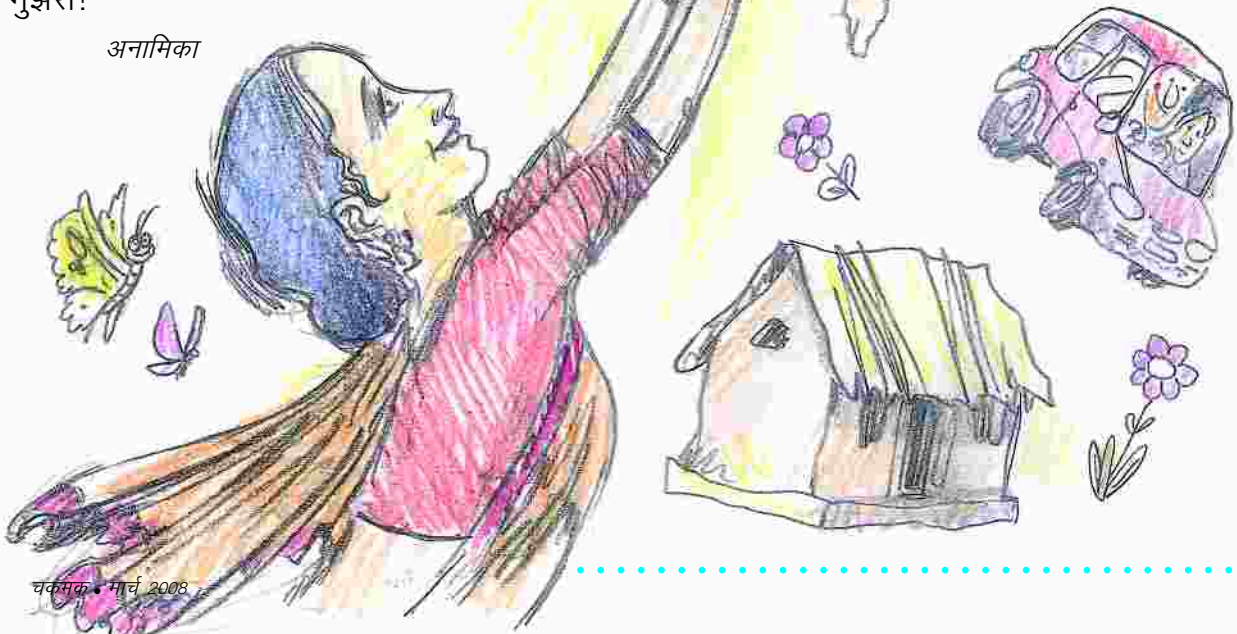


## ब्लाउज़

मेरा ब्लाउज़  
मेरे बच्चे का गुल्लक है!  
कहीं से भी घूमता-टहलता हुआ  
आता है  
और बड़े निश्चित भाव से  
पोस्ट कर जाता है  
चकमक पत्थर, सीपी  
सिगरेट की पन्नियाँ,  
खिलौनों के नट-बोल्ट,  
सारे अखोर-बखोर!

कभी-कभी मैं ऊबकर  
उसे मारने दौड़ती हूँ -  
अक्सर तो वह भाग जाता है  
और अगर कभी पिट गया तो  
सुकुर-सुकुर रोता-बिसुरता है  
नाक-आँख  
सब रगड़ देता है  
ब्लाउज़ से!  
बेचारे ब्लाउज़ की  
नन्ही-सी जान  
डरकर चिपक जाती है  
मुझसे!

अनामिका



## रेल चल रही

रेल चल रही हम सवार हैं  
देख रहे खिड़की पर बैठे  
कभी साइकिल  
कभी कार है।  
कोई चला रहा स्कूटर  
चली आ रही फिर से मोटर।  
ट्रैक्टर ट्रक भी आते-जाते  
बस का चलना लगातार है।  
खेत गाँव भी  
खूब मिल रहे,  
नीले-नीले  
फूल खिल रहे।  
मिलती जातीं नदियाँ नहरें।  
मन में उठतीं कैसी लहरें।  
आती वह बैलों की गाड़ी  
दूर दीखती  
एक पहाड़ी।  
हवा चल रही ठण्डी-ठण्डी  
कभी बह रही ज़ोरदार है।  
रेल चल रही हम सवार हैं।

प्रयाग शुक्ल